

# Lecture 18:

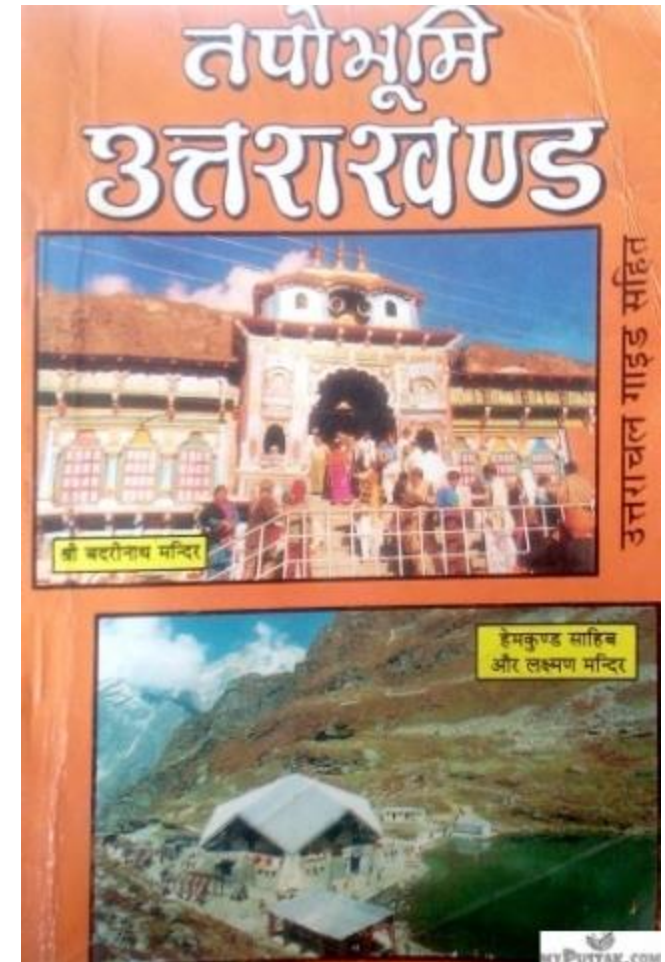
## Green and Saffron Politics in India - II

Course: Environment and Politics in India

# Case Study - II

## Tehri Dam

- Sundarlal Bahuguna and protracted protests (3 decades)
- Tehri Bandh Virodhi Sangharsh Samiti (TBVSS)
- Involvement of the Vishwa Hindu Parishad (VHP)
- Nature-Religion: Ganga as 'HOLY MOTHER', as emblem/symbol of national unity and security
- Garhwal's Hindu/Religious history : Seeped in mythological lore



# Case Study - II

Sundarlal Bahugana

- Freedom fighter, 'non-political'
- Disciple of Gandhi/Vinoba Bhave
- Incredible stamina, simple living, personal asceticism
- 'Rishi-like', gentle, unobtrusive

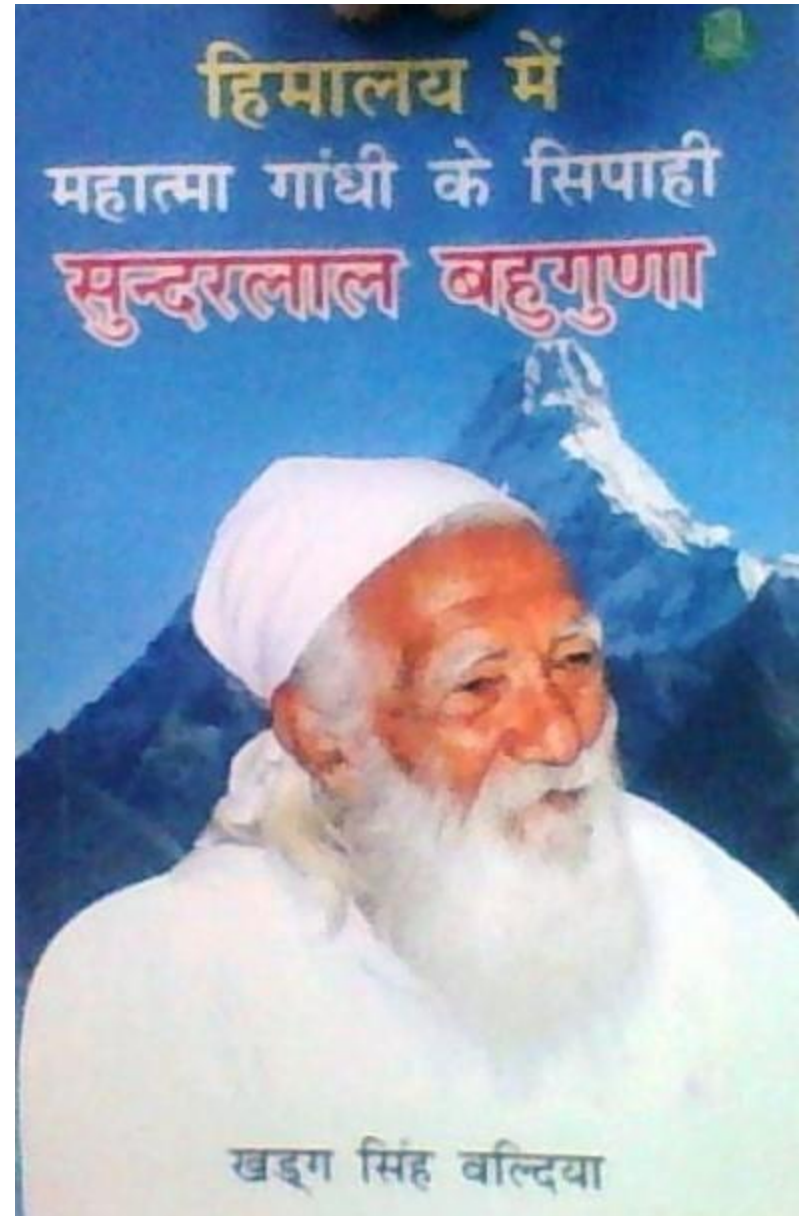
## PHILOSOPHY?

Development paradigm is flawed on TWO (western-inspired) counts:

- Nature is a commodity
- Nature is ONLY/primarily for humans

## SOLUTION?

Connecting 'Child' to Mother,  
*Sanskritik Samaj*



# Case Study - II

*Tehri bandh ke denei char,  
atyachar, begharbar, bhrastachar, narsamhar*

*Ever flowing from Gaumukh Himalaya  
O! Mother! Bhagwati your name  
The saints ever chant at Gangotri  
From the lotus feet of Vishnu you issue  
To disappear in the forest like locks of Shiva...*

*I am your undeserving son but you are my very own Mother.*

- **Ganga stuti**, written by Ghanshyam Sailani, recited regularly at the protest sites

**Environmental concerns = Religious/National/Emotional/Hindu sentiment**  
**Many other actors (Saklani/WWF/INTACH/Nariman, Sorabji)**

# Case Study - II

Discourse:

*“This is not only a question of drowning or displacing. It is a question of being attached with one’s self and honour. It is a question of preserving our cultural heritage, to save Ganga water from being poisoned. It is a question of being attached with our past”*

- **Kameshwar Bahuguna, *Tehri Bandh ka Virodh Kyon?***

*“I am here not to talk about the seismicity of the dam, or the cost-benefit of the project. I am talking about Gangatva. Gangatva is Hindutva. Hindutva is Rashtratva”*

– **Ashok Singhal**

PAST as a Golden Era. Healthy, happy, spiritually connected people. Humans connecting to the ‘spirit’ for ‘self-realization’.

Ganga as a NATIONAL cultural unifier:

*“Ganga is most important from the point-of-view of national integrity, cultural unity and oneness of India”*

- **Sundarlal Bahuguna**

# Case Study - II

*“Fulfill your duty to Mother Ganga! Never leave the opportunity to serve your God, your religion and your Mother Ganga...”*

**- Kawariyon se Appeal**

*“Atheists, anti-religious people and anti-social elements are exploiting the Ganga and the Tehri dam is a classic example of all this...The Tehri dam will make it impossible for Hindus and the religious people to see the Ganga”*

**- Sri Ganga Jee ka Mahatva**

Tehri as anti-woman, giant RAVAN.

ENEMIES? Red China, Muslim Pakistan, Communist Russia and conspiring ‘West’ attacking Indian culture.

Mother Cow + Mother Ganga + Mother India + Ayodhya/Kashi/Mathura

# टिहरी बांध द्वारा सर्वनाश को रोकने के लिए पूज्य साधु-संतों का आह्वान

परमपूज्य महानंदलेखर स्वामी जी योगेश्वर विदेही हरि जो महाराज, अग्रज सुप्रसन्न मेधा साधु समाज निर्धन पूज्य परिवार ने टिहरी बांध रोक का निरोधन करने तथा संरक्षित क्षेत्रों से जमीन के उपरांत पूज्य साधु-संतों के धर्मना को कि वे देश को टिहरी बांध के सर्वनाश से बचाने के लिए सर्वसाधारण को जागृत करें।

## विदेशी ऋण

संवेपुत्र संघा साक्षात् को भी समीरक जी कच्छक स्वाम, तब से इस पावन भूमि पर लाये परमपूज्य विदेही कुमरना से भारत भूमि से धर्म एवं परम्परा समाप्त करने के लिए टिहरी बांध का पड़पन्न चल रहा है। वर्तमान सरकार उग्रोक्त बहमन में फल कष्ट, विकास की जादू में जलता की जोखा देकर देश की विदेही ध्वज में डुबो रहो है। बताया जा रहा है कि ४ अरब रुपया व्यय हो चुका है, जिसमें से मासिक व्यय बहुत कम तथा अधिकतर धर्म बरबाद हुआ है। अनुमानतः अभी ४६ अरब रुपया और व्यय होगा, जिसपर भारत की अतिथि करोड़ों रुपया केवल ध्वज के रूप में देना होगा। "बोत सभी सो बोत यवो, अब राख रहो को" कहावत के अनुसार देश की ऐक बड़ी राखि सुरक्षित रखना ही बुद्धिमानो है।

## देश एवं परम्परा की हत्या—

स्वामी जी ने कहा कि यह समय में नहीं जाता कि सरकार देश, विदेश के वैज्ञानिकों, स्वतन्त्रता सेवासियों एवं विद्वान विचारवीध सचिवों की मन्त्रणा की टुकराये-टुके टिहरी बांध बनाकर धर्म, संस्कृति एवं परम्परा की हत्या करने पर क्यों तुमो है। जब-२ धर्म एवं परम्परा पर संकट आया तब-तब भारत के पूज्य अन्तारों तथा अधिषों ने सदा सुरक्षा की। यह भी एक ऐसी ही बड़ी है।

## बांध तोड़ने एवं दूधने की सम्भावना—

टिहरी बांध को तोड़ने एवं बहमनात टुके की सम्भावना निराधार नहीं है। इस क्षेत्र की बहादुरी कर्मो होने से मध्य-मध्य दूर दूर कर समीरकी में गिरती रही है। इस पू-स्वसन तथा वैज्ञानिकों के अनुसार बांध तोड़ने की पूर्णविष्ठाओं में बड़ी-बड़ी दूरारे होने से इतने बड़े अनालय का धार बहुत न कर अपना भूकम्प के सटके से बांध बहमनात दूर सकता है।

## धर्म में हस्तक्षेप—

भारत के परमपूज्य जगदगुरु संकराचार्यों, महामण्डलेखरों एवं विचारवीध साधु संतों का धर्म में इस बांधे हस्तक्षेप से चिन्तित होना स्वाभाविक है। इस बांध से १-मनोमो-यमोमो बांध चारों धर्मों की प्रागिक बाधक बन होगा २-वी मंगोमो का पावन जब खड़ा रहने से प्रदूषित होगा। ३-मनोमो से लेकर मंगोमो तक के सभी धर्मों, मन्त्रियों एवं धर्मों की अत्यधिक क्षति होने से धर्म, संस्कृति एवं परम्परा के धर्म समाप्त होने। परम पूज्य श्री रामलोक जी महाराज के स्मारक इस धर्मों में। ४-धर्म पशु, पेड़-पौधे तथा जड़ी-बूटियां मरट होंगी। ५-जकस्मान् बांध टूटने या तोड़ने जाने से वैद्यप्रयोग, अधिषेस, मुनि-की-रेतो, एवं हरिद्वार आदि तार्थ अधिषम्य होने तथा देश के बहुत बड़े धर्म में धर्मकर क्षति होगी।

अतएव स्वामी जी ने पूज्य साधु-संतों से विनम्र प्रार्थना की है कि वे इस भयंकर राक्षस समस्या के लिए सर्व साधारण जनता को जागृत करें। तथा इस विनाशकारी बांध को बन्द कराने व भगवती भावोन्मी की परिचा व परिचिता को बहमन रहने के लिये दूर सम्भव प्रयत्न करें।

विनोद :

(बिरेन्द्र वत्त सकलानी)

अध्यक्ष

टिहरी बांध विरोधी संघर्ष समिति  
टिहरी, मऊवाला

टिहरी बांध विरोधी संघर्ष समिति द्वारा प्रचारित।

अरुण बिटर्स, धमाखाली रोड, टिहरी से सुमित।



## कावड़ियों से अपील

प्यारे शिव भक्तों,

आप जानते हैं हम अपने पुरखों की शान्ति के लिए तथा उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु भागीरथी का पवित्र जल अपने इष्ट देव भगवान शंकर को अर्पण करते हैं। हम धरती माँ का स्पर्श करते हुए बाबा की भक्ति में मस्त बोल बम्ब-बोल बम्ब का जप घोष करते हुए गंगा जल को लाते हैं।

हम नहीं जानते कि आज इसी जल को कितना प्रदूषित किया जा रहा है। जिस जल के प्रति सभी प्राणी इतनी अधिक श्रद्धा भावना रखते हैं। जिस गंगा का ब्रह्मा जी के कमण्डल में निवास था। राजा भागीरथ ने उसे धरती पर उतारने के लिए कठोर तपस्या की, बाबा भोले ने गंगा जी का वेग धरती पर अपनी जटाओं में संभाला और हिमालय से सागर तक भागीरथ गंगा को लेकर गये। आज उसी गंगा मैया को टिहरी बांध में बांधकर और कारखाने लगाकर उसकी अविरल पवित्र धारा को रोका व प्रदूषित किया जा रहा है। क्या इसके प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं? अपने बाबा की आवाज है, भक्तों उठो ! गंगा मैया की सेवा में जुटो ! बाबा की भक्ति तथा गंगा मैया की सेवा का मौका मत छोड़ो।

यह हमारी परीक्षा का समय है। आजो हम गंगा मैया की पवित्रता बनाये रखने के लिए एक जुट होकर सेवा करें। गंगा की पवित्र धारा को टिहरी बांध या अन्य बांध-बांधकर नहीं रोकने दें तथा गंगा मैया में कोई गन्दगी न डालें। ऐसा संकल्प लेने के लिए महाशिव रात्रि 25 फरवरी को "पूरा महादेव" पर एक बड़ा सम्मेलन होगा जिसमें सभी भाई-बहिन शामिल होंगे।

समय : 25 फरवरी दोपहर 12 बजे से सायं 6 बजे तक

**"कैसे हो गंगा का रक्षण"**

**सम्मेलन**

दोपहर 12 से सायं 6 बजे तक

विनीत :

शिव कावड़ संघ

शिव मन्दिर, ग्राम-पों० डौला

मेरठ (उत्तर-प्रदेश)

सम्मेलन स्थल :

पूरा महादेवजी का मन्दिर

वाया बालेनी

जिला मेरठ



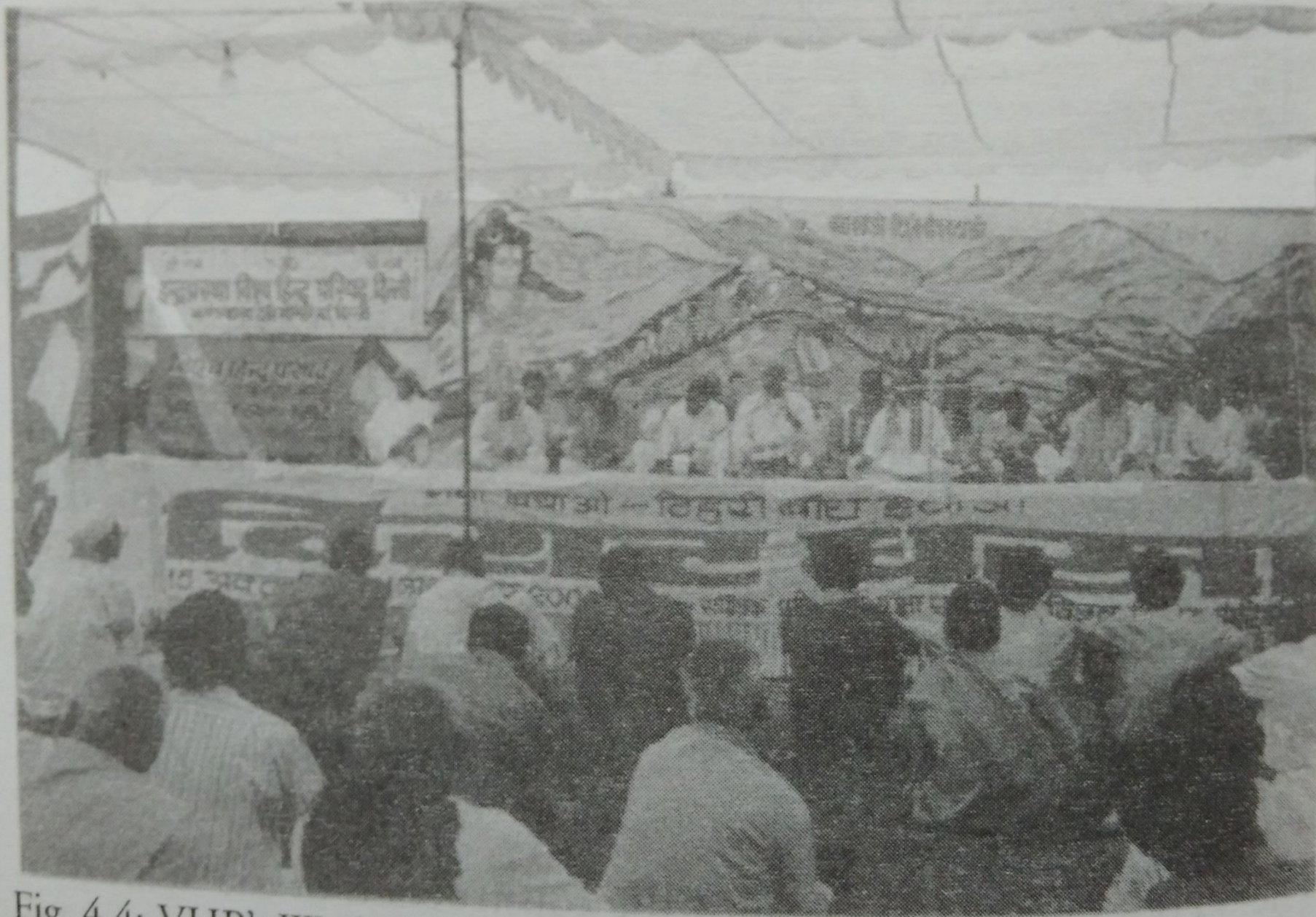


Fig. 4.4: VHP's Week-Long Protest Against the Dam at Ramlila Grounds, Delhi, October 2000



# गंगा मैया की अपने पुत्रों से गुहार

मेरे प्यारे पुत्रों !

प्रभु तुम्हें सबहुक्ति प्रदान करें !

हाँ तो, इस पृथ्वी पर आने से पूर्व सृष्टिकर्ता ने मुझे वचन दिया था कि पृथ्वी पर मेरी रक्षा मेरे भक्त और संत करेंगे आज उसका समय आ गया है।

टिहरी बाँध के रूप में मुझे बंदी बनाया जा रहा है। 42 वर्ग किलोमीटर की बाँध रूपी उस झील में मैं बरसाती पानी के साथ रहने के लिए बाध्य की जाऊँगी। बरसाती जल की मात्रा कितनी होगी, इस तथ्य का आश्वासन आज कोई भी वैज्ञानिक देने को तैयार नहीं। यह भी हो सकता है कि आपके पावन तीर्थ ऋषिकेश और हरिद्वार आदि स्थानों पर मेरा जल मात्र 20 प्रतिशत ही रह जाये और तुम्हारी भी गंगा की स्वयं की स्वयं ही पावन करने की क्षमता समाप्त हो जायेगी और तब मृत्यु को प्राप्त करने वाले अपने प्रिय जनों के मुख में गंगाजल डालकर उसकी मुक्ति की कामना भी तुम न कर सकोगे क्योंकि वह गंगा जल होगा ही नहीं वह तो 80 प्रतिशत बरसाती पानी होगा।

## एक छद्म

इस संकटकाल में मुझे अपने सुपुत्र पं. मदनमोहन मालवीय की बहुत याद आ रही है, जिसने ब्रिटिश शासकों के द्वारा मुझे हरिद्वार में बाँधने के दुस्साहस को अपने अपूर्व साहस से विफल कर दिया था और हरिद्वार हरि का द्वार ही बना रहा।

## लज्जा की बात

आज मुझे यह कहते लज्जा आ रही है कि तुम स्वतन्त्र हो और मेरे पुत्र होने का दावा भी करते हो। भागीरथ के वंशज और गंगा पुत्र गीम होने का तुम्हें गौरव भी प्राप्त है फिर भी तुम्हारे ही सामने कुछ दुराग्रहियों के द्वारा देश की समृद्धि और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर मुझे बंदी बनाया जा रहा है। धिक्कार है तुम्हारे पीरूषत्व को। मेरे पुत्र कहनाम मुझे कलंकित न करो।

## कौटुंबिक विवादों से

प्रिय शिशु एवं गंगा भक्तों ! बाँध की त्रासदी तो है ही, मैं तो तुम्हारे कर्मों से दुखी हूँ काश तुमने उपरोक्त सब तथ्यों पर ध्यान दिया होता, मेरे किनारे पर खड़े कारखानों पर एक दृष्टि डाली होती तो मेरे तन को विभिला करने के महापाप से तुम बच जाते।

## साक्षात्पहचान

मेरे पुत्रों और शत्रुओं साक्षात्पहचान ! मैं अपने पुत्रों को उनकी लापरवाही के लिये, शत्रुओं को उनकी दुष्टता के लिए साक्षात्पहचान कर रही हूँ। मैं समझती हूँ कि लापरवाही और दुष्टता में कोई अंतर नहीं होता दोनों ही विनाश का कारण बनती हैं। अतः मैं समय रहते साक्षात्पहचान कर रही हूँ कि यदि मैं अपना विकराल रूप धारण कर लिया तो सर्वनाश निश्चित है। बाँध के टूटने पर हरिद्वार तक 800 फुट तथा मेरठ तक 700 फुट ऊँची मेरी लहरें तुम्हारे घरबार, मठ मन्दिर, गुरुद्वारे सभी कुछ बहा ले जावेगी। एक प्रकार से प्रलय होकर सभी कुछ समाप्त हो जायेगा। तुम्हारा मूल-भविष्य और वर्तमान सब कुछ नष्ट हो जायेगा। तुम्हारी अपनी पहचान ही नष्ट हो जायेगी क्योंकि भारत और भारतीयों की पहचान मुझसे है मेरे पुत्रों ! मुझसे अर्थात् गंगा से।

## एक सदुपस्थास

मेरे संत पुत्रों ने मेरी व्यथा को समझकर 15 जून एवं 27 जून 2000 को हरिद्वार में संतों की दो विशाल सभाओं में एक संकल्प लिया है कि ये 28 जुलाई को हरिद्वार से एक विराट संत यात्रा निकालेंगे। यह रुड़की, मुजफ्फरनगर, खताली, मेरठ, गाँधीबाद आदि स्थानों पर जन जागरण हेतु विशाल धर्म सभायें करती हुई दिनांक 31 जुलाई को चौदनी चौक, दिल्ली में विराट धर्म सम्मेलन में परिवर्तित हो जायेगी। तदुपरांत संतों का एक प्रतिनिधि मण्डल राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री से मिलेगा।

यह शुभ संदेश मेरे मन में आशा की किरण जगाता है। समय रहते ये तो मेरे पुत्रों से तो। ध्यान रहे मैं रही तो तुम रहोगे। अतः मेरा प्रेम्ण अवाध गति से चलता रहे इसी में सबका कल्याण है। शोभशुभ !

तुम्हारी माँ गंगा

मुद्रक : हरिद्वार प्रिन्टिंग प्रेस, रुड़की, फोन : 72424, 75124

Fig. 4.6: Pamphlet in the Name of Mother Ganga, Declaring the Yatra from 26 to 31 July 2000, Released by VHP

जब तक जल के आवासीय न हों, इन्हें नहीं

बुंदे बालों और कारखानों आदि के दूषित जल को गंगा में न डालें।

सड़ी-गली वस्तुएँ एवं प्राणीवीन गंगा में न बहावें।

गंगा में किसी भी प्रकार के लेज व साबुन का प्रयोग न करें।

गंगा जल को प्रदूषण से बचाने के लिये प्रशासन एवं नगर पालिका से पूर्ण सहयोग की अपेक्षा है।



विश्व विचार की

सीधे सवाल

- क्या गंगा की पवित्रता अक्षुण्ण रहेगी?
- हिन्दू अपने संस्कारों में कौन से गंगा जल का प्रयोग करेंगे?
- विदेशी आक्रमणकारियों की विमाहों से क्या यह सीध बन सकेगा?
- भूकम्प आदि से टूट जाने पर भारत का कितना भू-भाग जलमग्न हो विनाश को प्राप्त होगा?
- और कौन होगा इस विनाश सीला का जिम्मेदार जिस पर मानवता भी से पड़ेगी?

जय गंगा जय गंगा



गंगा जी की आरती

ओ३म् जय गंगे माता, जैसा जय गंगे माता।  
जो लट तुमको खेददा, मनवाञ्छित फल पाता॥  
चन्द सी छ्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।  
हाटम पड़े जो तेरी, लो लट तर जाता॥  
ओ३म् जय

पुत्र लज्जत के तारे, सब जल को बढ़ाता।  
कृपा दूँदित हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख पाता॥  
ओ३म् जय

एक बार जो पायी, शरण तेरी आता।  
राम की आज्ञा मिलकर, परममूर्ति पाता।  
ओ३म् जय

आरुखी मानु तुम्हारी, जो लट गाता।  
लौकिक वही लहज मैं, मुक्ति को पाता॥  
ओ३म् जय

विचारक ई.म. गंगोत्री १९७५, १९७६

गंगा जी की जितनी  
अवस्था हो करनी



विश्व हिन्दू परिषद  
गंगा सभा, हरिद्वार  
गंगा सभा, दिल्ली  
गंगा सभा, जयपुर

Fig. 4.3: A Pamphlet by VHP, Ganga Sabha—Haridwar, Dharmyatra Mahasangh and Ganga Raksha Samiti against the Tehri Dam





Fig. 4.7: Idol of Mother Ganga with Amrit Kalash at the  
Ganga Raksha Yatra

Source: Photograph by the author

# Case Study - II

Questions to ask:

WHAT is being mobilised?

WHO is being mobilised? WHO is being 'othered'?

HOW is the mobilization happening?



# Case Study - III

## Vrindavan Forest Revival and Conservation Project

### Mathura:

- Culture and demography of a 'sacred pilgrimage' town.
- Seat of Brahminism, Jain and Buddhist traditions.
- Seat of art, craft, sculpture, literature, theatre.
- Multi-religious community (20% Muslims)

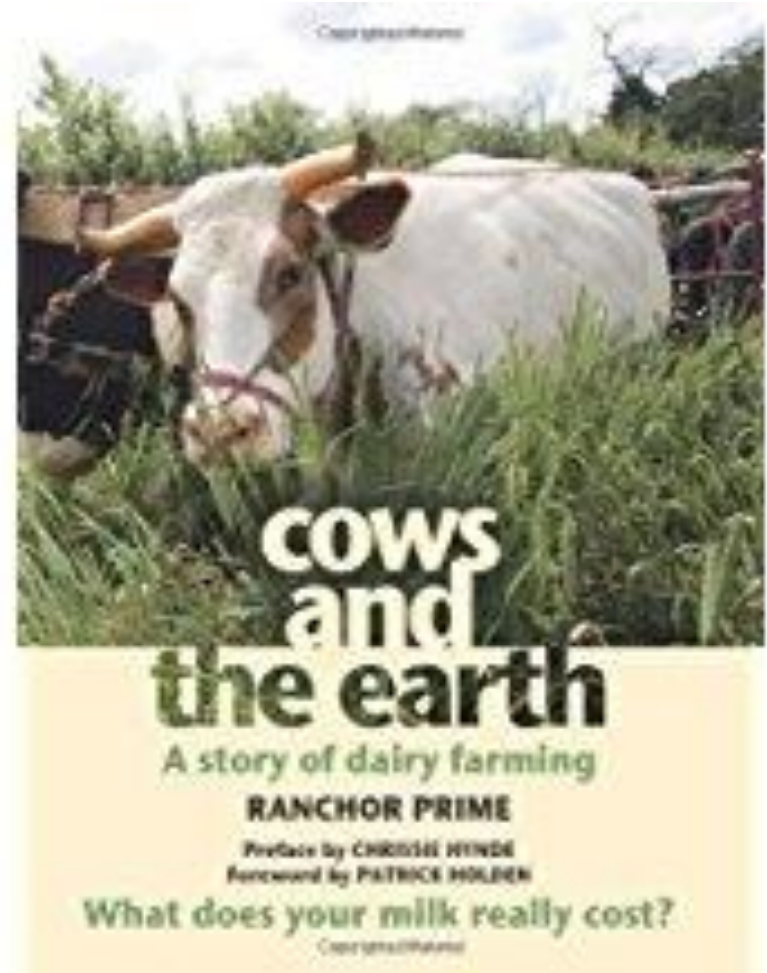
### Vrindavan's ENVIRONMENTAL Problems:

- Huge influx of pilgrims. Construction, transport, real estate
- Large-scale deforestation
- Poor sanitation/civic facilities. Open drains/overflowing sewer lines.
- Lack of drinking water, polluted aquifers. Water table falling by 5 ft/year
- Yamuna polluted by industrial waste AND sewage

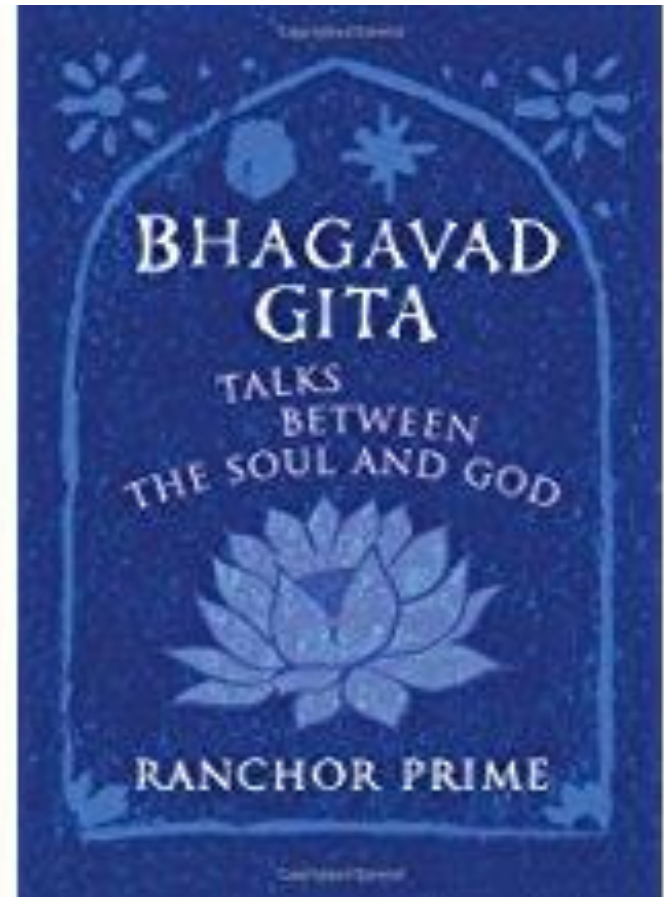
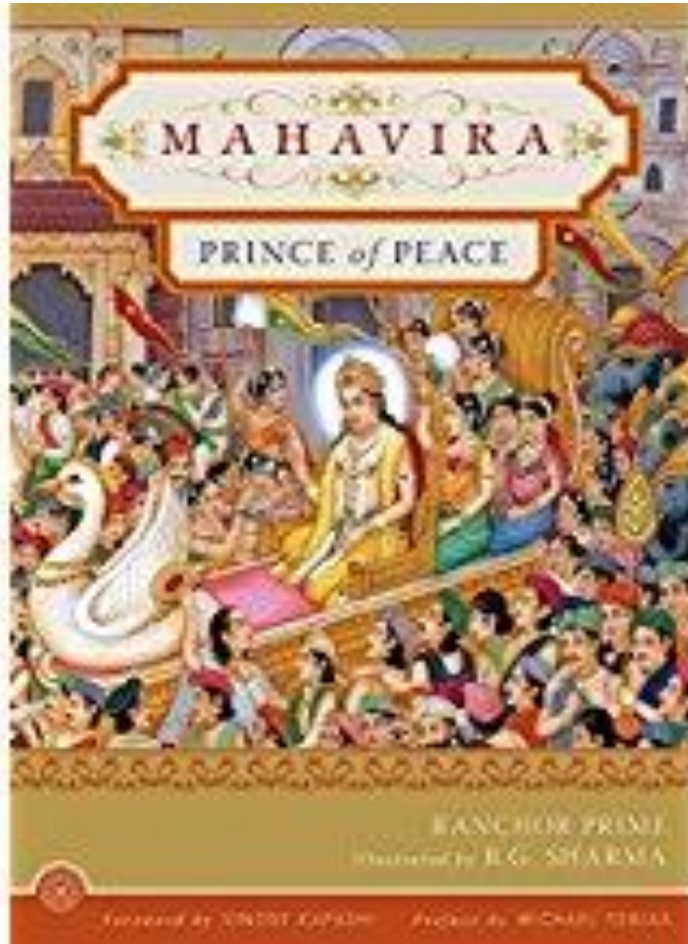
# Case Study - III



# Case Study - III



# Case Study - III



# Case Study - III

Vrindavan project:

- Launched on 21 Nov 1991, festive day of Vrinda Devi (local goddess).

*“the forest of Vrindavan is the sacred playground of Radha and Krishna. However, we, the people of this region, have cut its trees, polluted its Yamuna river and spoilt its sacred dust with our rubbish and sewage. I pledge that from now on I will do all within my power to protect Vrindavan from further destruction and to restore it to its original beauty”*

- WWF: Campaign will involve Hindus to conserve “their” environment. “Holy land”, Krishna as symbol of “environmental purity and beauty”...Hindu traditions of cleanliness/respect for nature.
- From “Forest Revival” to “Conservation” project. More ambitious, more wide-ranging, more inclusion of religious spaces and metaphors.
- BODIES involved: Scouts/NSS, Bal Vikas Manch, Vrindavan Vikas Parishad.



# Case Study - III

ACTIVITIES: Rallies, *raslilas*, poster-making, folk dances/songs on Radha Krishna, prayer lectures, art exhibitions.

*“Norms practiced in ancient times must be outlined so that we truly understand the principles and rules of present-day society...the Braj region was attacked by outsiders during the Middle Ages. Muslim invaders plundered and ravaged Mathura. As a result, many pilgrim places disappeared and many of the area’s norms and traditions passed into oblivion”.*

POLITICS of space.

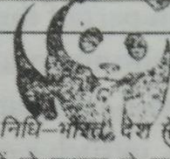
MANY ways of defining a space: Defense of home/community, protection of natural environments, pleasant and healthy workplace.

QUESTION:

WHAT is the utopia here? How it is described/envisaged?

## विश्व प्रकृति निधि, भारत

### धार्मिक पर्यावरणीय आन्दोलन



मान्यवर,

विश्व प्रकृति निधि-भारत देश से पर्यावरण संरक्षण हेतु अपने विभिन्न सेवा प्रकल्पों के माध्यम से कार्य कर रही है विश्व प्रकृति निधि द्वारा वृन्दावन एवं ब्रज के पर्यावरण संरक्षण हेतु वृन्दावन में वृन्दावन संरक्षण परियोजना चलाई जा रही है। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में धर्म एवं पर्यावरण का अटूट सम्बन्ध दर्शाया गया है। धर्म एवं पर्यावरण के इस सम्बन्ध को आन्दोलन का स्वरूप प्रदान कर जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से वृन्दावन संरक्षण परियोजना द्वारा "आध्यात्मिक सत्संग" का आयोजन किया गया है इस सत्संग प्रवचन कार्यक्रम को बाबा श्री विश्वेश्वर दास जी (इंजीनियर बाबा) सम्बोधित करेंगे।

आप सभी से अनुरोध है कि अपने इष्ट मित्रों सहित पधार कर इस आध्यात्मिक पर्यावरणीय प्रवचन का लाभ प्राप्त करें।

प्रवक्ता : बाबा श्री विश्वेश्वर दास जी (इंजीनियर बाबा)

विशेष - इस प्रवचन कार्यक्रम के अन्त में सभी को एक-एक पौध भी प्रसाद के रूप में वितरित की जायगी

प्रवचन स्थल	दिनांक	समय
1 श्री राधाकृष्ण कृपा कुंज बैंक ऑफ बड़ोदा के पास	3 जून	सायं 5 से 6
2 श्रीसुदामा कुटी, बंशीवट वृन्दावन	4 एवं 5 जून	सायं 5 से 6 विश्व पर्यावरण दिवस

निवेदक

वृन्दावन संरक्षण परियोजना  
छोटा मुंगेर मंदिर, मथुरा मार्ग  
वृन्दावन - 281121  
☎ 442771

श्रीघास - 443284

fig. 5.4: Satsang Organized by WWF-India

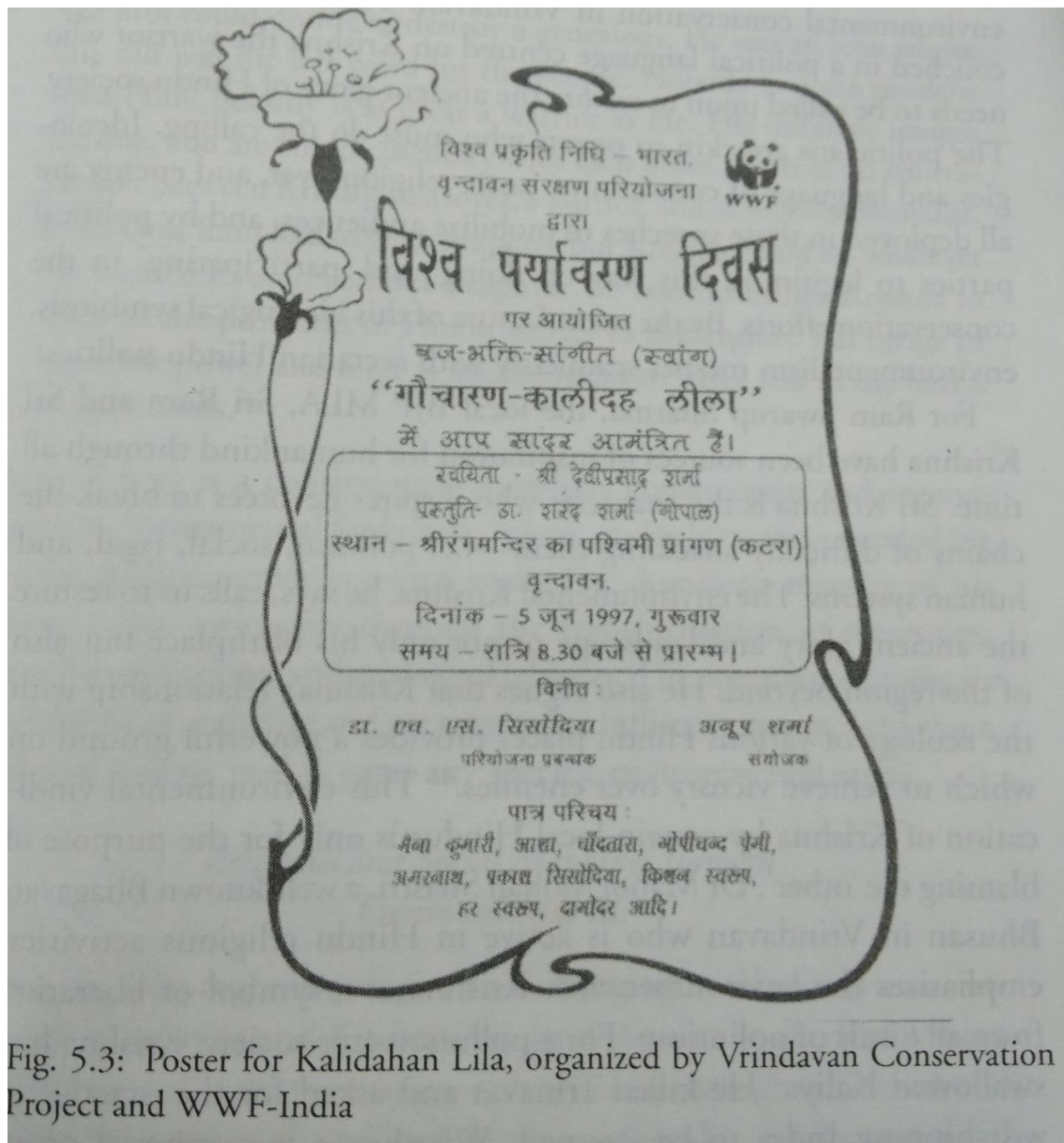


Fig. 5.3: Poster for Kalidahan Lila, organized by Vrindavan Conservation Project and WWF-India

## ब्रज रक्षक सेना

चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए समर्पित बुझारु  
ब्रजवासियों का संगठन

### लक्ष्य

1. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र को श्रीवैकुण्ठेश्वर बालाजी व वैष्णव देवी तीर्थ स्थान की तरह सुंदर, सुव्यवस्थित व सुविधासंपन्न क्षेत्र बनाने का प्रयास करना।
2. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र में आने वाली प्रापकृतिक व सांस्कृतिक धरोहर का विनाश रोकना और उनके संरक्षण के लिए सार्वजनिक सहयोग से जागरूकता तैयार करना।
3. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र में आपसी रजिज और फिजूल की हिंसा व लिप्ता युवा ऊर्जा को इस क्षेत्र में अव्यवस्था फैलाने वालों के विरुद्ध ले जाने का प्रयास करना।
4. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र के बहुसंख्यक कृषक व श्रमिक वर्ग के लिए सम्मानपूर्ण जीवन जीने योग्य हालात पैदा करना।
5. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र की युवा शक्ति को सफेदपोश भिकारी सरकारों की बाबूगिरी के मोह से मुक्त करा कर आर्थिक स्वातंत्र्य के लिए प्रेरित करना और उसका माहौल तैयार करना।
6. ऐसे हालात पैदा करना कि व्यापारी व औद्योगिक वर्ग बिना भय के सामाजिक न्याय से जी सकें।
7. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र के हर वर्ग को यह अहसास दिलाना कि हमारे ब्रजमंडल के हालात सुधारने कोई पाकिस्तानी या चीनी नहीं आयेगा- हम सबका ही कुछ करना होगा। ताकि हमारी संतानें सुख से जी सकें।
8. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र में निष्ठा से भजन करने वाले राम सत्तों और वैष्णवों को सताने वालों को सही रास्ते पर लाना।
9. चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र में तीर्थ यात्रा या पर्यटन के लिए आने वाले यात्रियों की सुख-सुविधाओं की माकूल व्यवस्था करना। साथ ही उनके क्षेत्र के विकास व तन, मन और धन से काबिल करने के लिए प्रेरित करना।

### सैनिक कौन बन सकता है ?

हर वह ब्रजवासी जो अपनी मातृभूमि से प्यार करता है। जो अपने दैनिक व्यवसायों के अतिरिक्त चौरासी कोस ब्रजमंडल क्षेत्र के लिए भी अपनी क्षमता अनुसार शक्ति, बुद्धि व साधन देने को तैयार है। जो सेना के अनुशासन में रह कर काम करने को तैयार है। जो यह मानता है कि वर्ग में ही उसका अधिकार है, फल व फायदा मिलना नहीं। जो दूसरों का सुधारने के साथ स्वयं भी सुधारने को तैयार है।

Fig. 5.1: A Pamphlet of the Braj Rakshak Sena



ध्वज : केसरिया ध्वज  
समूहगान : नृसिंह आरती  
आध्यात्मिक ग्रंथ : भगवत् गीता  
शुल्क : कृष्णभक्ति

शपथ : हर सैनिक निम्न शपथ लेगा:

"मैं स्वेच्छा से ब्रज रक्षक सेना का सैनिक बन रहा हूँ। मैं ब्रज रक्षक सेना के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समर्पित हूँ। इन्हें प्राप्त करने के लिए मैं कोई भी त्याग करने को तैयार हूँ।

मैं पैसे या पद के लालच से विचलित हुए बगैर पूरी निष्ठा से यौराजी वगैरा ब्रजमंडल क्षेत्र की सेवा करूंगा।

मैं सेना के सभी नियमों व अपने सेना नायकों के संगठन सभी सभी आदेशों का पालन करूंगा।

मैं जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, लिंग व संप्रदाय के भेद से ऊपर उठकर हर मानव के कल्याण के लिए कार्य करूंगा।

मैं अपने जीवन से हर किस्म के नशे, व्यभिचार व जुआखोरी जैसी व्यसनो का (यदि है तो) यथाशीघ्र परित्याग करने का प्रयास करूंगा।

यदि अपरिहार्य न हो तो मैं जीव हत्या पर आधारित तामसी योजना वद भी परित्याग करूंगा।

मैं भारत की महान् संस्कृति के प्रति आस्थावन् रहते हुए अपने जीवन में इसका यथा संभव पालन करूंगा।

मैं अपने परिवार व समाज के बुजुर्गों का सम्मान करूंगा।

मैं परमपिता परमेश्वर से, इस तपोभूमि पर तप करने वाले ऋषि-मुनियों से व राष्ट्र के प्रति जीवन बलिदान करने वाले शहीदों से विनम्रतापूर्वक अपनी दुर्बलताओं को स्वीकार करता हूँ। वे मुझे सिंह सा पौरुष, बगुले सा ध्यान, कज्जरी सा चेष्टा, श्वान की निद्रा व राष्ट्रभक्ति देने की कृपा करें।"

Fig. 5.2: Oath Taken by Members of the Braj Rakshak Sena



# Case Study - III

*“We are sewaks. Service – cleaning up of dirt – is our sacred duty, so that Krishna bhakts do not feel the dirt. We try to be faithful to our service. Wherever the bhakts put their feet, we wish to clean that area”.*

***– Rakesh Das, a Balmiki working for the Friends of Vrindavan***

## RESULT:

- Involvement of children in the religious/environmental discourse.
- “successfully evolved the people’s collective religious conscience...quiet abandonment of religious conservation practice is now slowly reversed”.
- Reinventing of SPECIFIC ‘traditions’/pasts. Glorious, clean, ethnically PURE?
- Ecology as a MEANS to modify socio-political realities? To strengthen a narrative of Vedic culture/Manu Smriti/Sacredness/Faith/Samskar/PURITY/Strong patriarchal family...